दिनाँक 07-03-2023 को जालंधर शहर में हुए वचनो का संक्षिप्त रूप

सज्जनों आज जो भी सत्संग, डिस्पेंसरी, कला केंद्र या किंडरगार्टन में कार्यरत सज्जन है उन्होंने अपना जायजा लेना है कि इतने सालों में उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में क्या प्रगति की?

इस तरह जब वे अपना-अपना जायजा लेंगे तो उनको अपना नतीजा खुद समझ आ जाएगा और ज्ञात होगा कि वे सज्जन अब आगे सेवारत रहने योग्य हैं या नहीं ?

इस सन्दर्भ में सज्जनों जो उन्नति न कर पाने के कारण स्वयं को सेवारत रहने के काबिल नहीं समझेंगे, उनको अपने आप ही पीछे हट जाना होगा। जानो यह काम इस बार होना ही होना है। इस विषय में सज्जनो जो भी स्त्री या पुरुष, युवा या प्रौढ़, नि:स्वार्थ सेवा में हिस्सा लेकर पूरी दिलचस्पी से काम करना चाहता है वह अपना नाम, बायोडाटा के साथ कल तक दे सकता है। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि जो सज्जन करते भी कुछ नहीं और चौधरी भी बने रहते हैं उनके कारण संस्था कि उन्नति में अवरोध पैदा न हो। आप समझते ही हो कि एक हद के बाद ऐसे सज्जनों को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

ऐसे सज्जन आंखें हमारी तरफ रखो झुकाओ नहीं। हम मानते हैं कि आपको शर्मिंदगी का एहसास हो रहा होगा पर कोई बात नहीं। यह

शर्मिंदगी तो अपने ही कर्मों की वजह से, धोखे की वजह से हो रही है क्योंकि एक कार्यभार लेकर फिर कार्य न करना और ड्यूटी पर बने रहना, यह कैसे उचित हो सकता है? यह सज्जनों अब नहीं चलने वाला क्योंकि हम ऐसे सज्जनों को बहुत बार समझा चुके हैं। समझाने के बावजूद उनके अंदर यह दुर्भाव बढ़ा है कि हमें नहीं हटा रहे तो इसका मतलब हम बढ़े महान हैं। पर अब जब पता चल गया हैं कि इन्ही के कारण सारा काम ख़राब हुआ हैं तो यह चलन अब नहीं चलेगा और इस विषय में अब तक संस्था का जो भी नुकसान हुआ है, वह घाटा/नुकसान उन्हीं से वसूला जाएगा। यहाँ जानो सजनों निष्काम सेवा से इंसान को बहुत लाभ प्राप्त होता है अब वह लाभ प्राप्ति यदि आप नहीं करना चाहते और फकीरी में ही रोते हुए जीवन बिताना चाहते हो तो आपकी खुशी में हमें भी खुशी है। ठीक है, अपनी चाहत के मुताबिक जीवन जियो। इस विषय में आगे से अब जालंधर कैंट या जालंधर सिटी वाले जो भी सज्जन, नेक नियति से कर्मठतापूर्वक काम करते हुए सकारात्मक नतीजा देना चाहते हैं वे निर्भय होकर आगे आओ और अपनी बुद्धि बल से सारा बिगड़ा हुआ खेल कुछ समय के अंदर ही संवार लो। यह अपने ही परमार्थी घर (जहां से कुल दुनिया का भला होने वाला है) के प्रति समर्पित होने की शुभ बात है। अब इस शुभ काम करने में देरी कैसी ? नहीं देरी बिलकुल नहीं करनी चाहिए। आज की बात को सज्जनों गंभीरता से लेना है क्योंकि आज जिस युवा-

प्रौढ़, पीढ़ी को निष्काम सेवा का मौका मिलने जा रहा है, उन्हें समझना चाहिए कि उनकी प्रारब्ध अच्छी है और इस क्रिया द्वारा उन्हें कुछ अच्छा प्राप्त होने जा रहा है। अत: इस शुभ लाभ को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपना नाम देने का प्रयत्न होना चाहिए। सबसे पहले इसलिए कह रहे हैं ताकि जितने भी सज्जनों की आवश्यकता है, वह आपके सोचते-सोचते ही पूरी न हो जाए और आप दुनिया में उलझ कर न रह जाओ यानि अपना जीवन बर्बाद न कर लो। इसलिए अब सोचने का समय हम नहीं दे रहे। यह तो समय काल की चाल को देखते हुए तुरंत आगे बढ़ने की बात है और इसी बात को मानने में हर मानव का हित है। अत: यह बात आपने हर सज्जन को बता देनी है और अपने अंदर भी हर पहलू से विचार करके निर्णय लेना है और फिर उस निर्णय अनुसार इस द्वारे की नीति नियमों को जन-जन तक पहुंचाने का परोपकार, सेवा भाव से करना है। कोई शाबाश दे इसकी इच्छा नहीं करनी क्योंकि देखने वाला सर्वज्ञ प्रभु सब देख रहा है। तात्पर्य यह है कि इस सत्य को मानकर चलना है कि देखने वाला देख रहा है, अत: किसी को दिखाने की जरूरत नहीं है। इस तरह सजनों आप सत्यता के प्रतीक बनो और निष्ठा से प्रदत कार्य को (चाहे वह डिस्पेंसरी का है, कला केंद्र का है या सत्संग का है) ऊपर उठाने का प्रयास करो। ऐसा सुनिश्चित करने से आपका आत्मविश्वास और क्षेत्रों में भी उन्नति करने के प्रति बढ़ेगा कि मैं इनमें सफल हूं तो मैं और कामों में भी सफल हो सकता हूं। इस प्रकार जब एक मानसिक

स्थिरता/सतर्कता का निर्माण होगा तो आप एक मजबूत इंसान की भांति मान-अपमान में एक समान रहते हुए, अपनी सेवा के प्रति हर पल जागरूक रह सकोगे। फिर यदि ऐसा करने में आपको सफलता मिलती है तो आप अपने गृहस्थ आश्रम/पढ़ाई में भी, सक्षमता से अच्छा परिणाम ले सकते हो। यकीन मानो सजनों कि यदि युवा अवस्था में ही यह चलन आपके स्वभाव के अन्तर्गत आ गया तो आपका जीवन सुख साधनों से भर जायेगा। अतः मानो सजनों कि आप जो यह यत्न करने जा रहे हो वह अपने आत्म उत्थान के लिए ही करने जा रहे हो। यहाँ याद रखो कि आत्मउत्थान से ही आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है। फिर कह रहे हैं कि अगर हकीकत में आप अपने सज्जन हो तो इस निष्काम सेवा को प्राप्त करने के लिए गहरी नींद से उठो और अपने आप को समर्पित कर दो। इससे लाभ यह होगा कि आपके सारे काम ठीक हो जाएंगे और गृहस्थ आश्रम में भी शांति स्थापित हो जाएगी। क्योंकि जब व्यवहार में सज्जनता का प्रवाह चलेगा तो अशांति का सवाल ही नहीं पैदा होगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने अंतर्घट में निर्मलता का प्रवाह बहा दो ताकि आपका रोम-रोम, रग-रग पावनता का प्रतीक बन जाये। इसके प्रति अपना ध्यान सजनों आकृष्ट करो। आशय यह है कि खुद को धोखा मत दो व संसार को जानने की मूर्खता मत करो। जानो संसार को भी तभी जान सकते हो जब खुद को जानते हो अतः खुद को जानो और इस हेतु निष्काम कर्म करो। याद रखो आप में से जो भी इस निष्काम सेवा से स्वयं को वंचित रखने का निश्चय लेगा वह अपने साथ आप ही वैर कमाएगा। जानो अपने साथ वैर कोई ज्ञानवान सज्जन

नहीं अपितु कोई बुद्धिहीन इंसान ही करता है। अतः ऐसा मत करो अपितु निष्काम सेवा करो। इस सेवा के परिणामस्वरूप जन्म-जन्मांतरो के संचित कर्म समाप्त हो जायेंगे और जीवन सफल हो जायेगा। जानो यह सफलता ही वास्तविक सफलता है। इस सफलता कि प्राप्ति हेतु अपने आप से कहो कि अब मैं मजबूती से निष्काम सेवा करने में रत रहूँगा और इस कार्य को सब कामों से अधिक प्राथमिकता दूंगा।

इस सन्दर्भ में अब सबको अपना-अपना विचार करना है। हम किसी को भी बाध्य नहीं कर सकते और न ही करेंगे क्योंकि हमने बाध्य कर-करके काफी सज्जनों को देख लिया है पर उन पर अब और समय लगाना बेकार है। याद रखो अब या छूटने वाले हो या सुधरने वाले हो। अतः अब अपना बायोडाटा श्याम सजन जी या मीनू सजन जी को दे देना क्योंकि आज के पश्चात जो सत्संग का कार्यभार है यह मुख्य रूप से देखेंगी और किसी का दखल नहीं होगा चाहे वह पुराना हो या नया हो। आप ने भी उनका दखल नहीं होने देना। याद रखो सजनों सज्जन ऐसे होने चाहिए जैसे हमारे अशोक सिक्का सजन जी हैं । इनकी हर डॉक्टर ने इतनी तारीफ की है कि हम तो प्रसन्नता से भर गए कि कोई सज्जन तो है जो द्वारे की नीति नियमों पर अपना जीवन कुर्बान कर सकता है । तो आपको इनसे सीख लेनी है और इनका पूरा सहयोग देना है । जैसे यह कहें करना है । कोई और आपको उलझाता रहे, उलझना नहीं । बस सिर्फ जय सियाराम जी और कोई बात सत्संग की नहीं करनी। जहां आपको रास्ता चाहिए वहां सत्संग की नीतियों वाली पुस्तक पढ़ लेना। उसको पढ़ने के पश्चात अगर आपको कोई कठिनाई

लगती है तो वह हमसे बात कर लेना। जितना भी सत्संग का सामान है उसकी लिस्ट आपने बना लेनी हैं और सब निर्भय होके पूरा ले लेना है। इस तरह आपके बहादुर बनना है। सजनों हम दिल से चाहते हैं कि सब का जीवन सकार्थ हो तभी आपको बार-बार कहते हैं। अतः जो भी सेवा ली हुई है उसमें गुस्ताखी नहीं करनी क्योंकि सच्चे पातशाह जी कहते हैं कि हमें बेकार की संगत यानि इतनी भीड़ की आवश्यकता नहीं है। हमें तो इतने ही सज्जन चाहिए जो आज्ञाकारी हो, जो सहर्ष सज्जन श्री शहंशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करें। तो शुक्र मनाओ जो उन्होंने हमें हुक्म दिया और सेवा दी। ठीक है?

हाँ जी।

तो अब आपको नीतियों वाली किताब पढ़नी है ताकि काम ठीक से पक्का हो जाए। याद रखो पति-पत्नी की यदि एकता हो और परिवार एक रास्ते पर हो तो घर में सुख रहता है। सो आपको भी यह एकता बना कर रखनी है।

फिर हम आपको चैत्र के यज्ञ का निमंत्रण देने आए हैं। सो अगर यह निमंत्रण मंजूर है तो बाकि सबको को भी यज्ञ पर आने के लिए प्रेरित करना है। इस सन्दर्भ में आप अभी से प्रेम का शगुन इकट्ठा करना शुरू कर दो यानि आपके अंदर आने के लिए उल्लास भरा हुआ हो। वहां पर जो भी नीति नियम है उसी अनुसार ही खाना-पीना-रहना है और पूरी बात समझने के लिए चार दिन निकालने हैं। हम भी वहां से आए हैं न चार दिन रह रहे हैं आप की कमियों को ठीक करने के लिए,

तो आपको भी आना है व औरों को भी कहना है। इन्ही शब्दों के साथ जय सीता राम जी।